विद्यापति

जन्म	:	14वीं शती उत्तरार्ध, अनुमानतः 1360 ।
निधन	:	15 वीं शती पूर्वार्ध, अनुमानतः 1448 ।
जन्म-स्थान	:	'विसपी' नामक ग्राम जो बिहार के मिथिला क्षेत्र में मधुबनी जिले के अंतर्गत है ।
माता-पिता	:	हाँसिनी देवी और गणपति ठाकुर ।
शिक्षा गुरु	:	पं० हरिमिश्र, मिथिला के सुप्रसिद्ध विद्वान ।
आश्रयदाता	:	मिथिला नरेश कीर्तिसिंह, शिवसिंह और उनकी रानी लखिमा देवी ।
उपाधियाँ	:	अभिनव जयदेव, कविशेखर, मैथिल कोकिल आदि ।
रचनाएँ	:	कीर्तिलता, भू-परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, कीर्तिपताका, पदावली आदि ।

शताब्दियों से महाकवि के रूप में सम्मानित विद्यापति की छवि विद्वानों के बीच एक राजपंडित, विद्वान गुरु और आचार्य की भी रही है, किंतु साहित्य और लोक सामान्य के बीच मुख्य रूप से वे एक रससिद्ध गायक, प्रेमी और भक्त कवि के रूप में ही प्रतिष्ठित हैं । मैथिल कोकिल के रूप में उनका यश देशांतरव्यापी है । साहित्य में उनकी अक्षय कीर्ति का आधार कीर्तिलता, कीर्तिपताका और पदावली जैसी कृतियाँ हैं । कीर्तिलता और कीर्तिपताका अपभ्रंश भाषा के परवर्ती रूप 'अवहट्ट' में रचित उनके प्रशस्तिकाव्य हैं जो युग परिपाटी से बँधे होकर भी किन्हीं अंशों में उसकी सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं । भाषा और साहित्य के प्राचीन रूपविकास और सामान्य इतिहास के प्रामाणिक अध्ययन की दृष्टि से ये रचनाएँ महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं ।

विद्यापति की पदावली भाव, अभिव्यक्ति कला, भाषा आदि की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण है ही, साथ ही वह संगीत नाट्य आदि कलाओं के अतिरिक्त व्यापक लोकतत्त्व के समावेश के कारण भी अतिशय महत्त्वपूर्ण है । पदावली ही वस्तुतः कवि की विपुल ऐतिहासिक लोकप्रियता और प्रभाव का अछीज आधार है । पदावली ने मिथिला और आसपास की समस्त लोक संस्कृति को बहुत गहराई के साथ प्रभावित और अनुप्राणित किया है । आधुनिक भारतीय साहित्य में गीतिकला के विकास के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पदावली का महत्त्व निर्विवाद है ।

विद्यापति सौंदर्य, प्रेम और भक्ति के महान कवि हैं । उनका काव्य भारतीय इतिहास में नवीन सांस्कृतिक लोकजागरण का संवाहक और अग्रदूत है । यह लोकजागरण भाषा, भाव, विचार और अभिव्यक्ति कला के क्षेत्रों में प्रकट होता है । मध्यकालीन भारतीय भाषाएँ लोकजागरण की इस नई चेतना को मुखरित और व्यक्त करने में जब समर्थ नहीं रह सकीं तब उनका स्थान साहित्य में उदीयमान लोकभाषाओं ने ग्रहण

किया । अवहट्ट अपर्याप्त सिद्ध हुई तब 'सबजन मिट्ठा' मैथिली साहित्य भाषा बनी । विद्यापति-पदावली इसका प्रमाण है । विद्यापति राजदरबार में प्रतिष्ठित थे, किंतु वे उसमें सीमित न रह सके । उनकी साहित्यिक अभिरुचियाँ उन्हें दरबार के बाहर व्यापक लोकजीवन के बीच ले गई और कवि का हृदय उससे एकाकार हो गया । यह मध्यकालीनता पर आधुनिकता की, राजसंस्कृति पर लोकसंस्कृति की, रूढ़ि और शास्त्रीयता पर स्वच्छंदता, लोकसारल्य और यथार्थता की विजय का प्रमाण था । विद्यापति का गीतिकाव्य इस विजय का विनीत जयघोष है ।

पदावली में राधा-कृष्ण के गहन प्रेम के अनेक पक्षों की रूप-रस से परिपूर्ण छटाएँ हैं । शृंगार और प्रेम के संयोग-वियोग, दोनों रूपों की ऐसी अभिव्यक्ति है जिसमें आनंद और वेदना की विविध दशाएँ परिपोषण पाती हैं । उन्होंने शक्ति के अनेक रूपों की, जिनमें दुर्गा और काली मुख्य हैं, स्तुतियाँ और वंदनाएँ रची हैं तथा नचारी पदों में शिवलीला का गान किया है । गंगा को लेकर भी उनकी स्तुतियाँ हैं । विद्यापति के पदों में प्रकृति और लोकजीवन के दुख-सुख की भी प्रसंगवश मार्मिक अभिव्यक्तियाँ हुई हैं ।

विद्यापति ने अपने काव्य से आगे के भक्तिकाव्य की विशद भूमिका रची ।

यहाँ प्रस्तुत दोनों पद रामवृक्ष बेनीपुरी के द्वारा संपादित 'विद्यापति पदावली' से लिए गए हैं । प्रथम पद प्रेम के विरह पक्ष का चित्रण करता है । इसमें श्रीकृष्ण के विरह की अत्यंत उत्कट व्यंजना है । महत्त्वपूर्ण यह है कि इस व्यंजना में शास्त्रीयता और रूढ़ि से अलग हटकर विरह की लोकसुलभ मार्मिकता उभरती है । इसी कारण इस पद में लोकगीत का माधुर्य आ पाया है । दूसरे पद में रूप वर्णन है, जिसे संयोग प्रेम के अंतर्गत रखा जा सकता है । वसंत के सरस वातावरण में रूप-सौंदर्य की छटा प्रेमी के तृषित चित्त में कुछ ऐसी अनुभव होती है कि उसे लगता है कि यह रूप-सौंदर्य अद्वितीय और अनुपम है । इसकी कहीं कोई बराबरी नहीं है ।

◆ ◆ ◆

" सौंदर्य विद्यापति के लिए सबसे बड़ा धर्म है, सबसे बड़ा कर्म है । सौंदर्य उनकी आँखों के सामने नाना रूपों में आता है, और वे सौंदर्य के स्वागत में निरंतर जागरूक दिखाई पड़ते हैं । विद्यापति के पास वह आँख थी, वस्तु के रूप को परखने का अणुवीक्षण यंत्र था, जिसकी सीमा में आकर रूप का एक अणु भी उनकी दृष्टि से बच नहीं सका । "

(विद्यापति)

–शिवप्रसाद सिंह

पद - 1

चानन भेल बिषम सर रे, भूषन भेल भारी ।
सपनहुँ नहिं हरि आएल रे, गोकुल गिरधारी ।।
एकसरि ठाढ़ि कदम-तरे रे, पथ हेरथि मुरारी ।
हरि बिनु देह दगध भेल रे, झामर भेल सारी ।।
जाह जाह तोहें ऊधव हे, तोहें मधुपुर जाहे ।
चन्द्रबदनि नहि जीउति रे, बध लागत काहे ।।
भनइ विद्यापति मन दए रे, सुनु गुनमति नारी ।
आज आओत हरि गोकुल रे, पथ चलु झट-झारी ।।

पद - 2

सरस बसंत समय भल पाओल, दछिन पबन बहु धीरे ।।
सपनहुँ रूप बचन एक भाखिए, मुख सओं दुरि करु चीरे ।।
तोहर बदन सन चान होअथि नहिं, जइओ जतन बिहि देला ।।
कए बेरि काटि बनाओल नव कए, तइओ तुलित नहिं भेला ।।
लोचन-तूल कमल नहिं भए सक, से जग के नहिं जाने ।।
से फेरि जाए नुकाएल जल भए, पंकज निज अपमाने ।।
भनइ विद्यापति सुनु बर जौबति, ई सभ लछमी समाने ।।
राजा सिबसिंह रूपनराएन, लखिमा देइ रमाने ।।

अभ्यास

पद के साथ

1. राधा को चंदन भी विषम क्यों महसूस होता है ?
2. राधा की साड़ी मलिन हो गई है । ऐसी स्थिति कैसे उत्पन्न हो गई ?
3. 'चन्द्रबदनि नहीं जीउति रे, बध लागत काहे ।' इस पंक्ति का क्या अभिप्राय है ?
4. विद्यापति विरही नायिका से क्या कहते हैं ? उनके कथन का क्या महत्त्व है ?
5. प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।
6. नायिका के मुख की उपमा विद्यापति ने किस उपमान से दी है ? प्रयुक्त उपमान से विद्यापति क्यों संतुष्ट नहीं हैं ?
7. कमल आँखों के समान क्यों नहीं हो सकता ? कविता के आधार पर बताएँ । आँखों के लिए आप कौन-कौन सी उपमाएँ देंगे । अपनी उपमाओं से आँख का गुण-साम्य भी दर्शाएँ ।
8. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य उद्घाटित करें –

   (क) भनइ विद्यापति मन दए रे, सुनु गुनमति नारी ।
   आज आओत हरी गोकुल रे, पथ चलु झट-झारी ।

   (ख) लोचन-तूल कमल नहिं भए सक, से जग के नहिं जाने ।
   से फेरि जाए नुकाएल जल भए, पंकज निज अपमाने ।।

9. द्वितीय पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।

पद के आस-पास

1. उद्धव श्रीकृष्ण के मित्र थे । उन्हें गोकुल में गोपियों को समझाने के लिए भेजा गया था । उन्होंने गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान देने का प्रयास किया, पर गोपियाँ इसके लिए तैयार नहीं थीं । सूरदास ने भी 'भ्रमरगीत' में इसका सुंदर अंकन किया है । यहाँ एक पद द्रष्टव्य है –

   बिन गोपाल वैरनि भई कुंजैं।
   तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं ।।
   वृथा बहति जमुना, खग बोलत, वृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
   पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजैं ।।
   ए उधो, कहियो माधव सों विरह कदन करि मारत लुंजैं।
   सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं।।

इस पद को विद्यापति के प्रथम पद के साथ रखकर देखें और दोनों कवियों के विरह वर्णन की तुलना करते हुए बताएँ कि किस पद में विरह वेदना की अभिव्यक्ति स्वाभाविक और प्रभावशाली हुई है ?

2. विद्यापति की भाषा मैथिली है । बिहार के उन जिलों को मानचित्र में चिह्नित करें, जहाँ यह भाषा बोली जाती है ।
3. विद्यापति की मैथिली के अतिरिक्त संस्कृत और अवहट्ट रचनाओं के संबंध में भी जानकारी प्राप्त करें ।
4. मिथिला में विद्यापति और उगना की कथा बहुत प्रसिद्ध है । इसके संबंध में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
5. अपनी पदावली में विद्यापति ने किन विषयों को प्रमुखता दी है ? अपने शिक्षक से मालूम करें ।
6. विद्यापति की 'नचारियाँ' क्या हैं ? उनकी चार नचारियों का संकलन करें ।
7. वसंत पर उनके कुछ पद बहुत प्रसिद्ध हैं । ऐसे कुछ पद इकट्ठा कर उन्हें याद करें ।
8. विद्यापति के पद गेय हैं । इन पदों को कक्षा में गाकर सुनाएँ ।
9. विद्यापति के पदों को विभोर होकर गाते-गाते चैतन्य महाप्रभु मूर्च्छित हो जाते थे । चैतन्य महाप्रभु कौन थे ? उनके संबंध में विशेष जानकारी प्राप्त करें ।
10. विद्यापति को बंगला, उड़िया और असमी भाषा-भाषी भी अपना कवि मानते हैं, क्यों ? शिक्षक से चर्चा करें ।
11. विद्यापति को 'मैथिल कोकिल' कहा जाता है, क्यों ?

भाषा की बात

1. प्रथम पद से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
2. चंद्रबदनि में रूपक अलंकार है । रूपक और उपमा में क्या अंतर है ? उदाहरण के साथ स्पष्ट करें ।
3. दूसरे पद में कवि ने नायिका के सौंदर्य के लिए कई उपमाएँ दी हैं । प्रयुक्त उपमेय की उपमानों के साथ सूची बनाएँ ।
4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –
   हरि, देह, चंद्रमा, पथ, पवन, कमल, लोचन, जल
5. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखेंhttps://www.evidyarthi.in/
   दगध, भूषन, गुनमति, दछिन, पबन, जौबति, बचनं, लछमी
6. दोनों पदों में प्रयुक्त मैथिल शब्दों की सूची तैयार करें और उनके संगत अर्थ एवं रूप स्पष्ट करें तथा उनसे वाक्य भी बनाएँ ।

शब्द छवि

चानन	:	चंदन
सर	:	सिर, माथा
भूषण	:	गहना, अलंकार
भारी	:	भार स्वरूप
एकसरि	:	अकेले

पथ हेरथि	:	रास्ता देख रही है
दगध	:	दग्ध, झुलसा हुआ
झामर	:	मलिन
जाह	:	जाओ
जीउति	:	जीवित रहेगी
बध	:	वध
काहे	:	क्यों
झट-झारी	:	झटककर
पाओल	:	पाया
बदन	:	मुख
चान	:	चंद्रमा
जइओ	:	जितना भी
जतन	:	यत्न, उपाय
बिहि	:	विधि, विधाता, ब्रह्मा
कए	:	कितने
तुलित	:	तुल्य
लोचन	:	आँख, नयन
नुकाएल	:	छिप गए
पंकज	:	कमल
जौवति	:	युवती
लखिमा देइ	:	लखिमा देवी
रमाने	:	रमण
ई सभ	:	यह सब
मधुपुर	:	मथुरा
गोकुल	:	ब्रज, वृंदावन
चीर	:	वस्त्र